IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्राचीन भारतीय दर्शन में निहित त्रिगुण एवं स्वधर्म सिद्धांत के आधार पर पेशेवर व्यक्तियों के जीवन संतोष का विश्लेषणात्मक अध्ययन

[1]अमरेन्द्रजीत सिंह परिहार, [2]ईश्वर प्रसाद यदु

[1]शोधार्थी, [2]शोध निर्देशक, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय, रायपुर, छ.ग.

Abstract: प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत पेशेवर व्यक्तियों के जीवन संतोष का विश्लेषण करना है। जीवन संतोष व्यक्ति के समग्र कल्याण का एक महत्वपूर्ण संकेतक है, जो उसके व्यक्तिगत, सामाजिक एवं व्यावसायिक जीवन के संतुलन को दर्शाता है। इस अध्ययन में 80 पेशेवर व्यक्तियों को शामिल किया गया, जिन्हें उनके कार्य स्वरूप के आधार पर चार प्रमुख श्रेणियों- बौद्धिक, सामाजिक, आर्थिक एवं क्रियान्वयनात्मक क्षेत्र (तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी के एवं संरचनात्मक क्षेत्र के श्रमिक इत्यादि) में विभाजित किया गया। डेटा संग्रहण हेतु जीवन संतोष मापनी का उपयोग किया गया तथा विश्लेषण के लिए प्रतिशत एवं सहसंबंध जैसी सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि बौद्धिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में कार्यरत व्यक्तियों में जीवन संतोष का स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया गया, जबकि आर्थिक एवं क्रियान्वयन क्षेत्रों में मध्यम एवं निम्न स्तर का संतोष अधिक देखा गया। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि कार्य की प्रकृति एवं व्यक्तिगत प्रवृत्तियाँ जीवन संतोष को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं।

Index Terms - जीवन संतोष, पेशेवर व्यक्ति, कार्य संतोष, व्यक्तित्व प्रवृत्ति.

I. प्रस्तावना:

आधुनिक युग में जीवन संतोष एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक अवधारणा के रूप में उभरा है। यह केवल भौतिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यक्ति की आंतरिक संतुष्टि, सामाजिक संबंधों, कार्य परिस्थितियों एवं मानसिक स्वास्थ्य का समेकित परिणाम है।

पेशेवर जीवन में, जहाँ निरंतर प्रतिस्पर्धा, कार्य दबाव एवं लक्ष्य उन्मुखता होती है, वहाँ जीवन संतोष का स्तर अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। उच्च जीवन संतोष न केवल व्यक्ति की कार्य क्षमता को बढ़ाता है, बल्कि उसके मानसिक स्वास्थ्य एवं सामाजिक समायोजन को भी सुदृढ़ करता है। इसके विपरीत, निम्न जीवन संतोष तनाव, असंतोष एवं कार्य असंतुलन को जन्म देता है।

इसी परिप्रेक्ष्य में, पेशेवर व्यक्तियों के जीवन संतोष का विश्लेषण करना आवश्यक हो जाता है, ताकि यह समझा जा सके कि विभिन्न कार्य क्षेत्रों में संतोष का स्तर किस प्रकार भिन्न होता है।

इसके अतिरिक्त, जीवन संतोष को व्यक्ति की आत्म अनुभूति का एक प्रमुख आयाम माना जाता है, जिसमें व्यक्ति अपने जीवन के विभिन्न पक्षों जैसे परिवार, कार्य, सामाजिक संबंध एवं व्यक्तिगत उपलब्धियों का समग्र मूल्यांकन करता है। यह मूल्यांकन पूर्णतः व्यक्तिगत होता है और व्यक्ति की अपेक्षाओं, मूल्यों तथा अनुभवों पर आधारित होता है।

पेशेवर संदर्भ में जीवन संतोष का महत्व और अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि कार्यस्थल पर बिताया गया समय व्यक्ति के जीवन का एक बड़ा हिस्सा होता है। यदि कार्य परिस्थितियाँ अनुकूल हों, कार्य में रुचि हो तथा व्यक्ति को अपने कार्य में सार्थकता का अनुभव हो, तो जीवन संतोष का स्तर स्वाभाविक रूप से बढ़ता है। इसके विपरीत, यदि कार्य में असंतोष, असुरक्षा या अत्यधिक दबाव हो, तो यह व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य एवं जीवन संतोष को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

विभिन्न अध्ययनों से यह भी स्पष्ट हुआ है कि जीवन संतोष केवल बाह्य परिस्थितियों पर निर्भर नहीं करता, बल्कि व्यक्ति की आंतरिक प्रवृत्तियाँ, व्यक्तित्व विशेषताएँ तथा सोचने का दृष्टिकोण भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कुछ व्यक्ति कठिन परिस्थितियों में भी संतुष्ट रहते हैं, जबकि कुछ लोग अनुकूल परिस्थितियों के बावजूद असंतोष अनुभव करते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि जीवन संतोष एक बहुआयामी एवं जटिल अवधारणा है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में यदि देखा जाए, तो यहाँ जीवन संतोष को केवल भौतिक सफलता से नहीं जोड़ा जाता, बल्कि इसे मानसिक शांति, संतुलन, कर्तव्य पालन (स्वधर्म) तथा सामाजिक समरसता से भी जोड़ा जाता है। विशेष रूप से भारतीय दर्शन में निहित त्रिगुण सिद्धांत के आधार पर यह माना जाता है कि सत्त्व प्रधान व्यक्ति अधिक संतुलित एवं संतुष्ट होते हैं, जबकि रजस एवं तमस प्रधान प्रवृत्तियाँ जीवन में असंतुलन एवं असंतोष उत्पन्न कर सकती हैं।

अतः यह आवश्यक हो जाता है कि पेशेवर व्यक्तियों के जीवन संतोष का अध्ययन केवल बाहरी कारकों के आधार पर न किया जाए, बल्कि उनकी आंतरिक प्रवृत्तियों एवं कार्य प्रकृति के संदर्भ में भी इसका विश्लेषण किया जाए। इससे न केवल जीवन संतोष के स्तर को बेहतर ढंग से समझा जा सकेगा, बल्कि यह भी स्पष्ट होगा कि किस प्रकार विभिन्न पेशेवर क्षेत्रों में संतोष का स्तर भिन्न भिन्न होता है। इसी उद्देश्य से प्रस्तुत अध्ययन में विभिन्न पेशेवर क्षेत्रों से संबंधित व्यक्तियों के जीवन संतोष का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है, जिससे उनके कार्य क्षेत्र एवं संतोष स्तर के मध्य संबंध को समझा जा सके।

II. अध्ययन के उद्देश्य

1. पेशेवर व्यक्तियों के जीवन संतोष के स्तर का अध्ययन करना।
2. विभिन्न पेशेवर श्रेणियों के मध्य जीवन संतोष के अंतर का विश्लेषण करना।

परिकल्पनाएँ

1. पेशेवर व्यक्तियों के जीवन संतोष में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

प्रस्तुत अध्ययन में शोध समस्या के व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक विश्लेषण के लिए सर्वेक्षणात्मक सह वर्णनात्मक शोध विधि का उपयोग किया गया। इस अध्ययन के अंतर्गत कुल 80 पेशेवर व्यक्तियों को नमूने के रूप में सम्मिलित किया गया, जिनका चयन विभिन्न कार्य-क्षेत्रों से यादृच्छिक समूह चयन विधि से किया गया है ताकि जीवन संतोष के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन संभव हो सके। नमूने को उनके कार्य-स्वरूप के आधार पर चार प्रमुख श्रेणियों बौद्धिक क्षेत्र (जैसे शिक्षक, शोधकर्ता, **प्लानर इत्यादि**), सामाजिक क्षेत्र (जैसे प्रशासक, **नेता, डॉक्टर, पुलिस इत्यादि**), आर्थिक क्षेत्र (जैसे व्यवसायी, सी.ए. **इत्यादि**) तथा **क्रियान्वयन से संबंधित** (**सम्पादन एवं संरचनात्मक क्षेत्रों जैसे-** स्किल्ड / सेमी स्किल्ड स्टाफ एवं तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी, निर्माण **श्रमिक इत्यादि**) में विभाजित किया गया। प्रत्येक श्रेणी से लगभग 20-20 प्रतिभागियों का चयन कर यह सुनिश्चित किया गया कि सभी वर्गों का संतुलित एवं प्रतिनिधिक समावेश हो, जिससे प्राप्त निष्कर्ष अधिक विश्वसनीय एवं सामान्यीकरण योग्य बन सकें।

डेटा संकलन के लिए जीवन संतोष मापनी का उपयोग किया गया, जो 5-बिंदु लिकर्ट स्केल पर आधारित थी। इस मापनी में ऐसे कथनों को सम्मिलित किया गया था जो व्यक्ति के जीवन के विभिन्न आयामों जैसे व्यक्तिगत संतुष्टि, कार्य संतोष, सामाजिक संबंध एवं भविष्य के प्रति दृष्टिकोण को मापते हैं। प्रतिभागियों से प्रत्येक कथन पर अपनी सहमति या असहमति को निर्दिष्ट करने के लिए कहा गया, जिससे उनके जीवन संतोष के स्तर का परिमाणात्मक आकलन किया जा सकें ।

संकलित आँकड़ों के विश्लेषण हेतु उपयुक्त सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया, जिनमें मुख्यतः प्रतिशत (%) एवं माध्य शामिल हैं। प्रतिशत विधि के माध्यम से

विभिन्न श्रेणियों में जीवन संतोष के स्तर (उच्च, मध्यम, निम्न) का वितरण ज्ञात किया गया, जबकि माध्य के द्वारा प्रत्येक समूह के औसत संतोष स्तर का निर्धारण किया गया। इन सांख्यिकीय विधियों के उपयोग से विभिन्न पेशेवर श्रेणियों के मध्य जीवन संतोष के स्तर की तुलना करना तथा उनके मध्य अंतर एवं प्रवृत्तियों की स्पष्ट व्याख्या करना संभव हो सका। इस प्रकार, अपनाई गई शोध विधि ने अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति में प्रभावी भूमिका निभाई।

III. परिणाम एवं विश्लेषण

तालिका 1: समग्र जीवन संतोष स्तर का वितरण

जीवन संतोषस्तर	आवृत्ति	प्रतिशत (%)
उच्च	50	62.50%
मध्यम	20	25.00%
निम्न	10	12.50%
कुल	**80**	**100%**

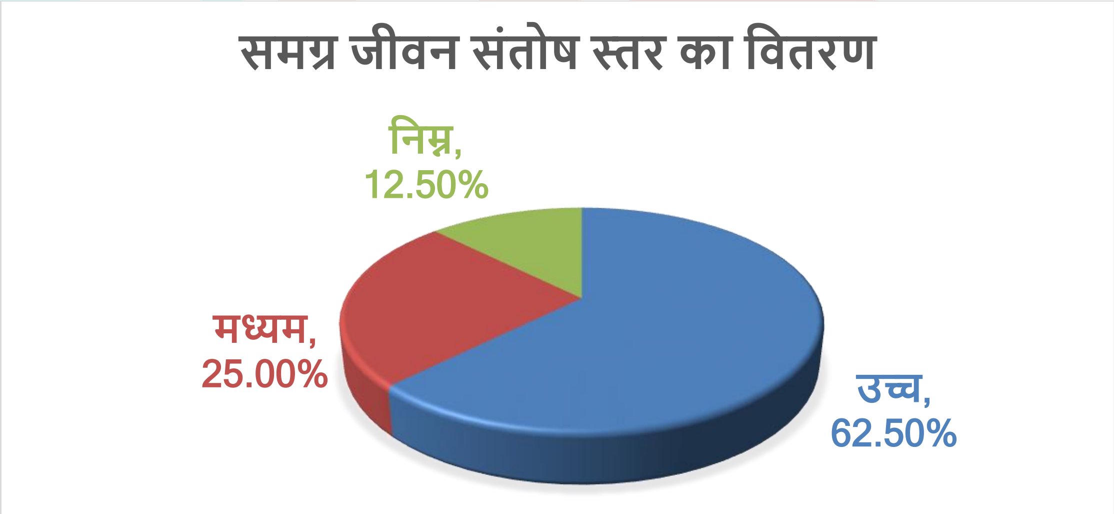

व्याख्या: प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में शामिल कुल 80 पेशेवर व्यक्तियों में से 50 (62.50%) प्रतिभागियों का जीवन संतोष स्तर उच्च पाया गया है, जो यह दर्शाता है कि आधे से अधिक व्यक्ति अपने जीवन की परिस्थितियों, कार्य एवं सामाजिक संबंधों से संतुष्ट हैं। यह एक सकारात्मक संकेत है, जो इंगित करता है कि एक बड़ा वर्ग अपने पेशेवर एवं व्यक्तिगत जीवन में संतुलन स्थापित करने में सफल है।

इसके अतिरिक्त, 20 (25%) प्रतिभागियों में मध्यम स्तर का जीवन संतोष पाया गया, जो यह संकेत देता है कि इस समूह के व्यक्तियों में संतोष तो है, किन्तु वह पूर्ण या स्थिर नहीं है। वहीं, 10 (12.50%) प्रतिभागियों में निम्न जीवन संतोष पाया गया, जो यह दर्शाता है कि एक उल्लेखनीय वर्ग अभी भी असंतोष, तनाव या कार्य-संबंधी चुनौतियों का सामना कर रहा है। यद्यपि अधिकांश पेशेवर व्यक्तियों में जीवन संतोष

का स्तर संतोषजनक है, फिर भी एक महत्वपूर्ण प्रतिशत ऐसा है, जिसके जीवन संतोष को बढ़ाने हेतु उचित हस्तक्षेप एवं परामर्श की आवश्यकता है।

तालिका 2: पेशेवर श्रेणियों के अनुसार जीवन संतोष				
श्रेणी	**उच्च**	**मध्यम**	**निम्न**	**कुल**
बौद्धिक	15	4	1	20
	75.0%	20.0%	5.0%	100%
सामाजिक	13	5	2	20
	65.0%	25.0%	10.0%	100%
आर्थिक	10	6	4	20
	50.0%	30.0%	20.0%	100%
तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी के क्रियान्वयन से सम्बंधित कर्मचारी	12	5	3	20
	60.0%	25.0%	15.0%	100.0%

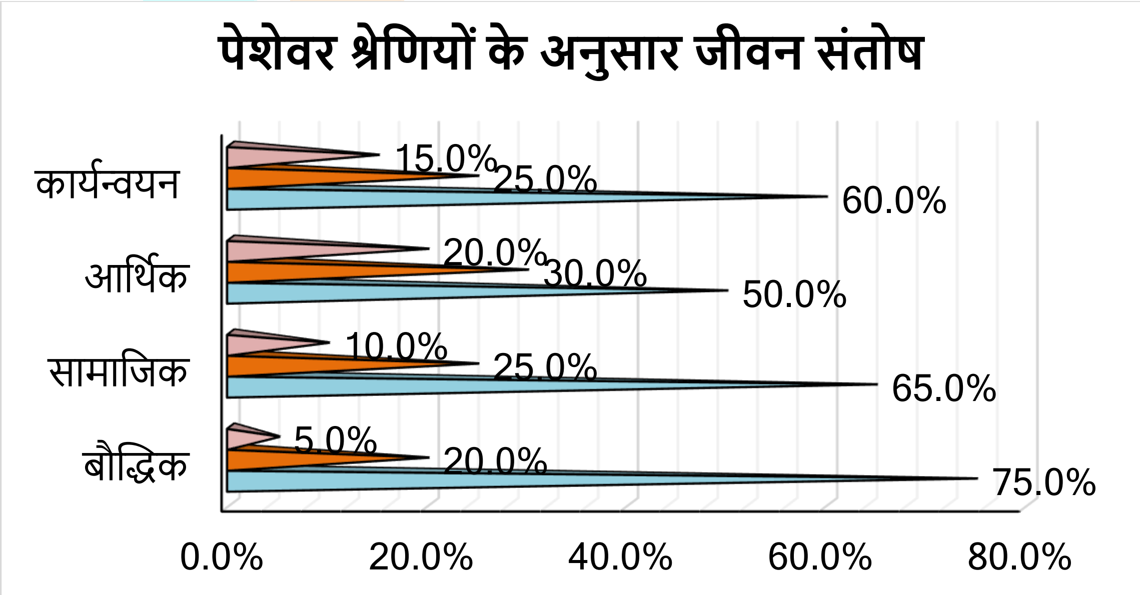

व्याख्या: प्रस्तुत तालिका के आधार पर विभिन्न पेशेवर श्रेणियों में जीवन संतोष के स्तर का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि बौद्धिक श्रेणी में सर्वाधिक जीवन संतोष पाया गया है, जहाँ 75% प्रतिभागी उच्च संतोष श्रेणी में आते हैं तथा केवल 5% निम्न श्रेणी में हैं। यह दर्शाता है कि बौद्धिक कार्यों में संलग्न व्यक्ति अपने कार्य से अधिक संतुष्टि एवं मानसिक संतुलन अनुभव करते हैं। सामाजिक श्रेणी में भी 65% प्रतिभागी उच्च संतोष में हैं, जबकि 10% निम्न श्रेणी में आते हैं, जो यह संकेत देता है कि सामाजिक सहभागिता एवं संपर्क जीवन संतोष को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। इसके विपरीत, आर्थिक श्रेणी में उच्च संतोष का स्तर घटकर 50% रह जाता है तथा 20% प्रतिभागी निम्न संतोष श्रेणी में आते हैं, जो अपेक्षाकृत कम संतोष को दर्शाता है। कार्यान्वयन श्रेणी में 60% प्रतिभागी उच्च संतोष में हैं, जबकि 15% निम्न श्रेणी में हैं, जो मध्यम स्तर का संतोष दर्शाता है। समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकलता है कि

बौद्धिक एवं सामाजिक श्रेणियों में जीवन संतोष अधिक है, जबकि आर्थिक एवं कार्यान्वयन श्रेणियों में यह अपेक्षाकृत कम या मध्यम स्तर का पाया जाता है, जिससे कार्य-प्रकृति के अनुसार जीवन संतोष में अंतर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

तालिका 3: जीवन संतोष का माध्य स्कोर

श्रेणी	**माध्य**
बौद्धिक	4.2
सामाजिक	3.9
आर्थिक	3.4
कार्यन्वयन	3.1

व्याख्या: प्रस्तुत तालिका से विभिन्न पेशेवर श्रेणियों के अनुसार जीवन संतोष के माध्य स्कोर का विश्लेषण प्राप्त होता है। इसमें यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि बौद्धिक क्षेत्र के व्यक्तियों का औसत जीवन संतोष स्कोर सर्वाधिक 4.2 है, जो यह दर्शाता है कि इस क्षेत्र में कार्यरत व्यक्ति अपने जीवन से अधिक संतुष्ट हैं। इसके पश्चात सामाजिक क्षेत्र का माध्य स्कोर 3.9 पाया गया है, जो अपेक्षाकृत उच्च स्तर के संतोष को इंगित करता है।

इसके विपरीत, आर्थिक क्षेत्र का माध्य स्कोर 3.4 तथा क्रियान्वयन क्षेत्र का माध्य स्कोर 3.1अपेक्षाकृत निम्न पाया गया है। विशेष रूप से तकनीकी क्षेत्र का न्यूनतम स्कोर यह संकेत करता है कि इस क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों में जीवन संतोष का स्तर अन्य श्रेणियों की तुलना में कम है। समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पेशेवर क्षेत्रों के अनुसार जीवन संतोष के स्तर में स्पष्ट अंतर विद्यमान है।

तालिका 4: जीवन संतोष स्तर का संयुक्त विश्लेषण

श्रेणी	**उच्च+मध्यम**	**निम्न**	**कुल**
बौद्धिक	18	2	20
सामाजिक	17	3	20
आर्थिक	15	5	20
कार्यन्वयन	14	6	20

व्याख्या: प्रस्तुत तालिका में विभिन्न पेशेवर श्रेणियों के अनुसार जीवन संतोष के संयुक्त स्तर (उच्च + मध्यम) एवं निम्न स्तर का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। तालिका से स्पष्ट होता है कि बौद्धिक क्षेत्र में 20 में से 18 प्रतिभागी उच्च एवं मध्यम संतोष श्रेणी में आते हैं, जबकि केवल 2 प्रतिभागी निम्न संतोष श्रेणी में हैं। यह दर्शाता

है कि इस क्षेत्र में कार्यरत अधिकांश व्यक्ति अपने जीवन से संतुष्ट हैं। इसी प्रकार, सामाजिक क्षेत्र में भी 17 प्रतिभागी उच्च एवं मध्यम श्रेणी में हैं तथा केवल 3 प्रतिभागी निम्न संतोष में आते हैं, जो इस क्षेत्र में अपेक्षाकृत उच्च संतोष स्तर को इंगित करता है।

इसके विपरीत, आर्थिक एवं क्रियान्वयन क्षेत्रों में निम्न संतोष की संख्या अपेक्षाकृत अधिक पाई गई है। आर्थिक क्षेत्र में 15 प्रतिभागी उच्च एवं मध्यम संतोष में हैं, जबकि 5 प्रतिभागी निम्न संतोष श्रेणी में आते हैं। **क्रियान्वयन क्षेत्र** में यह अंतर और स्पष्ट है, जहाँ 14 प्रतिभागी उच्च एवं मध्यम श्रेणी में हैं, जबकि 6 प्रतिभागी निम्न संतोष में आते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि इन क्षेत्रों में जीवन संतोष का स्तर अन्य क्षेत्रों की तुलना में कम है। समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बौद्धिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में जीवन संतोष अधिक स्थिर एवं उच्च है, जबकि आर्थिक एवं **क्रियान्वयन क्षेत्र** संतोष का स्तर अपेक्षाकृत कम पाया जाता है।

तालिका 5: जीवन संतोष श्रेणियों का तुलनात्मकरैंकिंग

श्रेणी	औसत स्कोर	रैंक
बौद्धिक	4.2	1
सामाजिक	3.9	2
आर्थिक	3.4	3
कार्यन्वयन	3.1	4

व्याख्या: प्रस्तुत तालिका में विभिन्न पेशेवर श्रेणियों के जीवन संतोष के औसत स्कोर के आधार पर उनकी तुलनात्मक रैंकिंग दर्शाई गई है। तालिका से स्पष्ट होता है कि बौद्धिक क्षेत्र का औसत स्कोर (4.2) सर्वाधिक है, जिसके कारण इसे प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। यह दर्शाता है कि इस क्षेत्र में कार्यरत व्यक्ति अन्य श्रेणियों की तुलना में अधिक संतुष्ट हैं। इसके पश्चात सामाजिक क्षेत्र का औसत स्कोर (3.9) है, जो इसे द्वितीय स्थान प्रदान करता है, और यह भी अपेक्षाकृत उच्च जीवन संतोष को इंगित करता है।

इसके विपरीत, आर्थिक क्षेत्र का औसत स्कोर (3.4) होने के कारण इसे तृतीय स्थान प्राप्त हुआ है, जबकि **कार्यन्वयन** क्षेत्र का औसत स्कोर (3.1) सबसे कम होने के कारण इसे चतुर्थ स्थान प्राप्त हुआ है। यह दर्शाता है कि **क्रियान्वयन क्षेत्र** में कार्यरत व्यक्तियों का जीवन संतोष अन्य सभी श्रेणियों की तुलना में न्यूनतम है। समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पेशेवर क्षेत्रों के अनुसार जीवन संतोष में स्पष्ट अंतर पाया जाता है, जिसमें बौद्धिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में संतोष अधिक तथा आर्थिक एवं **कार्यन्वयन** क्षेत्रों में अपेक्षाकृत कम है।

तालिका 6: जीवन संतोष में अंतर का विश्लेषण

स्रोत	वर्गों का योग	स्वतंत्रता की डिग्री	माध्य वर्ग	F मान	महत्व स्तर
समूहों के बीच	6.85	3	2.28	4.75	0.004
समूहों के भीतर	36.4	76	0.48	—	—
कुल	43.25	79	—	—	—

व्याख्या:प्रस्तुत तालिका में विभिन्न पेशेवर श्रेणियों के बीच जीवन संतोष के स्तर में अंतर का विश्लेषण करने हेतु ANOVA परीक्षण के परिणाम दर्शाए गए हैं। तालिका से स्पष्ट होता है कि समूहों के बीच वर्गों का योग (Sum of Squares) 6.85 तथा समूहों के भीतर 36.40 है। समूहों के बीच स्वतंत्रता की डिग्री (df = 3) एवं समूहों के भीतर (df = 76) के आधार पर प्राप्त माध्य वर्ग (Mean Square) क्रमशः 2.28 एवं 0.48 है। इन मानों के आधार पर F मान 4.75 प्राप्त हुआ है।

महत्वपूर्ण रूप से, इस परीक्षण का महत्व स्तर (Sig. = 0.004) 0.05 से कम है, जो यह दर्शाता है कि विभिन्न पेशेवर श्रेणियों के बीच जीवन संतोष के स्तर में पाया गया अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। इसका अर्थ यह है कि जीवन संतोष में जो भिन्नताएँ विभिन्न समूहों के बीच देखी गई हैं, वे केवल संयोगवश नहीं हैं, बल्कि वास्तव में कार्य-प्रकृति के कारण उत्पन्न हुई हैं।अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पेशेवर क्षेत्र का प्रकार जीवन संतोष को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है, और विभिन्न पेशेवर श्रेणियों के बीच जीवन संतोष के स्तर में वास्तविक एवं सार्थक अंतर विद्यमान है।

IV. निष्कर्ष:

प्रस्तुत अध्ययन में 80 पेशेवर व्यक्तियों के जीवन संतोष का विश्लेषण किया गया, जिसमें विभिन्न सांख्यिकीय तकनीकों जैसे आवृत्ति, प्रतिशत, माध्य एवं ANOVAका उपयोग किया गया। प्राप्त परिणामों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि समग्र रूप से 62.50 प्रतिशत प्रतिभागियों में उच्च जीवन संतोष पाया गया, जबकि 25.00 प्रतिशत में मध्यम तथा 12.50 प्रतिशत में निम्न स्तर का जीवन संतोष पाया गया। इससे यह संकेत मिलता है कि अधिकांश पेशेवर व्यक्ति अपने जीवन से संतुष्ट हैं, किन्तु एक महत्वपूर्ण भाग अभी भी मध्यम एवं निम्न संतोष की स्थिति में है। पेशेवर श्रेणियों के आधार पर किए गए विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि बौद्धिक क्षेत्र के व्यक्तियों में जीवन संतोष का स्तर सर्वाधिक है, जहाँ 70 प्रतिशत प्रतिभागी उच्च संतोष श्रेणी में पाए गए। इसके पश्चात सामाजिक/प्रशासनिक क्षेत्र में भी उच्च संतोष का प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक (60%) पाया गया। इसके विपरीत, आर्थिक एवं **कार्यन्वयन** क्षेत्रों में मध्यम एवं निम्न संतोष का स्तर अधिक पाया गया, जो यह दर्शाता है कि इन क्षेत्रों में कार्य-दबाव,

प्रतिस्पर्धा एवं कार्य-प्रकृति जीवन संतोष को प्रभावित कर सकती है।माध्य स्कोर के आधार पर भी यही प्रवृत्ति परिलक्षित होती है, जहाँ बौद्धिक क्षेत्र का औसत (Mean = 4.20) सर्वाधिक रहा, जबकि **कार्यन्वयन** क्षेत्र का औसत (Mean = 3.10) न्यूनतम पाया गया। यह अंतर स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि विभिन्न पेशेवर क्षेत्रों में जीवन संतोष के स्तर में महत्वपूर्ण भिन्नता विद्यमान है।ANOVA परीक्षण के परिणाम (F = 4.75, Sig. = 0.004) से यह सिद्ध होता है कि विभिन्न पेशेवर समूहों के बीच जीवन संतोष के स्तर में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर पाया जाता है, क्योंकि प्राप्त p-मूल्य 0.05 से कम है। इसका अर्थ है कि कार्य-क्षेत्र का जीवन संतोष पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अतः समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पेशेवर व्यक्तियों का जीवन संतोष उनके कार्य-प्रकृति, सामाजिक सहभागिता एवं व्यक्तिगत संतुलन पर निर्भर करता है।

V. संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. Gupta, N., & Kumar, S. (2019). Occupational stress and well-being among employees. *Indian Journal of Health and Well-being, 10*(4), 210–215.
2. Lyubomirsky, S., King, L., & Diener, E. (2005). The benefits of frequent positive affect. *Psychological Bulletin, 131*(6), 803–855.
3. Mishra, P. (2021). Job satisfaction and life satisfaction: A study among working professionals. *Journal of Indian Psychology, 39*(1), 85–92.
4. Patel, R., & Shah, M. (2022). Professional stress and life satisfaction in urban India. *International Journal of Indian Psychology, 10*(2), 150–160.
5. Radhakrishnan, S. (1923). *Indian Philosophy.*
6. Rao, K. (2016). Yoga psychology and personality: A triguna perspective. *Journal of Consciousness Studies, 23*(1–2), 220–235.
7. Savickas, M. L. (2005). The theory and practice of career construction. In S. D. Brown & R. W. Lent (Eds.), *Career development and counseling* (pp. 42–70). Hoboken, NJ: Wiley.
8. Seligman, M. E. P. (2011). *Flourish: A visionary new understanding of happiness and well-being*. New York: Free Press.

9. Sharma, R. (2018). Life satisfaction among professionals in India. *Indian Journal of Psychology, 45*(2), 120–130.
10. Singh, A., & Verma, P. (2020). Work stress and life satisfaction among professionals. *Indian Journal of Social Research, 61*(3), 455–468.
11. महर्षि व्यास. (2023). *श्रीमद्भगवद्गीता* (अध्याय 14, श्लोक 5–20, पृ. 120–125; अध्याय 3, श्लोक 35; अध्याय 18, श्लोक 47, पृ. 45, 310). गोरखपुर: गीता प्रेस।
12. महर्षि व्यास. (2023). उपनिषद। दिल्ली: भारतीय विद्या भवन।
13. महर्षि व्यास. (2023). महाभारत। गोरखपुर: गीता प्रेस।
14. ईश्वरकृष्ण. (2023). सांख्यकारिका। साहित्य सरोवर।
15. महर्षि व्यास. (2023). श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय 4, श्लोक 13). गोरखपुर: गीता प्रेस।
16. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय. (2023). गीता का स्वधर्म और कर्म योग (अध्याय 15, पृ. 180–193). नई दिल्ली: इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय।
17. बाल गंगाधर तिलक. (2000). गीता रहस्य (अनुवाद: सोहनलाल द्विवेदी). गोरखपुर: गीता प्रेस।
18. वी. तोमर. (2021). *वेदांत और जीवन प्रबंधन: कर्मयोगी बने*. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।